Holy Drops
Be with God

कृष्ण भजन-मत रोको डगर मेरे श्याम

मत रोको डगर मेरे श्याम...(2)
आज मैं तो आई दही बेचन को...(2)
कुंवर कलाई छेड़ो न यूँ हमको ..
क्या कहेगा ये सारा ग़ाव ..

बोलो क्या है जी उसका नाम...(2)
दही के बहाने आई जिसे मलिन को
मन मैं छुपाये गोरी प्रीत की लगन को
जिसके मन मैं हैं तेरा धाम..

मत रोको डगर मेरे श्याम..
बोलो क्या है जी उसका नाम..

होओओ . . मैं एक ब्रज की नार नवेली
कहेते सभी ब्रशिभान की लली

होओ ओ .. दही बेचन तू सांझ ढले क्यूँ
आई रे गुजरिया मेरी गली
आछा ये बाताओ गोरी दही वाली कोई छोरी
अईसे सज धज के जो आये

तुम्हे क्यों बातये भला
है कोई छबीला जिसे मेरे रंग की ही दही भाये
मोहे ढूंढे जो मन को था
मत रोको डगर मेरे श्याम..

बोलो क्या है जी उसका नाम..
हओ.. हम भी हैं दही माखन के रसिया
कहेते हमें सब सवारिये

हओ...सावाला तन हैं सावाला मन भी
फिरि भी मैं तेरी बावरिया
आते जाते रोके काहे रस्ते मैं रोके काहे सुध बुध क्यूँ तू ने चुराई

आच्चा...भोली भाली राधा रानी
मेरी भी यही कहानी मुरली मैं तू ही है समायी
..

Be with God
Holy Drops

मत रोको डगर मेरे श्याम...(2)
आज मैं तो आई दही बेचन को...(2)
कुंवर कलाई छेदों न यूँ हमको..
क्या कहेगा ये सारा ग़ाव..